OCTOBER TO DECEMBER 2014-15

आगामी तीन माह के प्रस्तावित गतिविधियाँ

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	प्याज	रॉयल सलेक्शन	प्याज की अधिक उपज देने वाली किस्म का आकलन	01	04
2.	चना	जे.जी. 226	चना में फली भेदक नियंत्रण हेतु समन्वित प्रबंधन का आकलन	04	04
3.	चना	जे.जी. 226	चना में कॉलर राट रोग नियंत्रण हेतु ट्राइ-कोडर्मा विरिडी के प्रभाव का आकलन	02	04
4.	टमाटर	करिश्मा	टमाटर के पछेती रोग नियंत्रण हेतु जैव कारक एवं रासायनिक दवाईयों का आकलन	02	04
5.	गेहूँ	रतन	गेहूँ की स्वचलित रीपर से कटाई का आकलन	03	06
6.	पैरा/गन्ना	टाइकोडर्मा विरिडी	पैरा /गन्ना के पत्ते के टाइकोडर्मा विरिडी से अपघटन का आकलन	02	04
7.	मछली	रोहू,कतला	तालाब में संचय पूर्व मछली उत्पादन का आकलन	0.4	04
8.	गाय	संकर नस्ल	दुग्ध उत्पादन के लिए मेथोचिलेटेड मिनरल मिक्चर का आकलन	04 पशु संख्या	04
9.	बछड़ा/ बछड़ी	देशी	बाह्यपरजीवी नियंत्रण हेतु नीम एवं करंज तेल के प्रभाव का आकलन	14 पशु संख्या	07
योग				18.3	41

अंग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	चना	इंदिरा चना	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
2.	चना	जे.जी.- 226	चने में कतार बोनी हेतु सीड कम फर्टिलाइजर डील का प्रदर्शन	12	12
3.	गेहूँ	जे.डब्लु-273	गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण का प्रदर्शन	12	12
4.	गन्ना	सी.ओ.- 86032	गन्ने में लाल सड़न नियंत्रण हेतु गर्म जल एवं रासायनिक नियंत्रण का प्रदर्शन	12	12
5.	टमाटर	करिश्मा	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	02	12
6.	अरहर	आशा	अरहर की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
7.	अजोला	अजोला पिन्नाटा	दुधारू पशुओं के आहार के रूप में अजोला उत्पादन तकनीक का प्रदर्शन	02 टैंक	12
8.	अजोला	अजोला पिन्नाटा	बकरी के आहार के रूप में अजोला उत्पादन तकनीक का प्रदर्शन	02 टैंक	12
9.	मछली/ बत्तख	रोहू, कतला मृगल	मछली सह बत्तख पालन का प्रदर्शन	02	12
योग				64	108

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वालीतकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	अरहर	आशा	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
2.	चना	जे.जी.226	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	80	80
योग				92	92

कृषकों एवं कृषि महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	90
2.	पौध संरक्षण	4	1	88
3.	उद्यानिकी	4	1	87
4.	मृदा विज्ञान	4	1	86
5.	पशुपालन	4	1	84
6.	मत्स्यकी	4	1	83
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		28	7	600

विस्तार गतिविधियाँ

वैज्ञानिकों का खेतो में भ्रमण	20	60
केन्द्र पर कृषकों का भ्रमण	80	80
प्रक्षेत्र दिवस	03	300
टाईकोडर्मा उत्पादन प्रशिक्षण	02	100
पशु स्वास्थ्य शिविर	02	200
योग	107	740

बीजोत्पादन कार्यक्रम

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित होने वाला बीज प्रकार	रकबा (एकड़)
1.	चना	J.G. - 6	आधार	16.5
2.	चना	J.G. - 130	आधार	11
3.	मूंग	H.U.M.-12	प्रजनक	2.5
योग				30

कृषि महाविद्यालय में अध्यापन

क्र.	अधिकारी का नाम	पदनाम	महा.वि.मे अध्यापन	वर्ष	वि.सं.
1.	डॉ.बी.पी.त्रिपाठी	प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक (पौध रोग विज्ञान)	कृ.महा.विद्या.एवं अनु. केन्द बेमेतरा	प्रथम	1
2.	मनीषा खापर्डे	विषय वस्तु विशेषज्ञ (मात्स्यकी)	संत कबीर कृ. महाविद्यालय एवं अनु. केन्द्र कवर्धा	तृतीय	1
योग					2

बुक-पोस्ट
भारत शासन सेवार्थ

कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
पिन-491995
फोन/फैक्स 07741-299124
E-mail: kvkkawardha@yahoo.in

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. ....
....
....

Agrawal Kwd # 94060 63405

उन्नत कृषि — समृद्ध किसान

इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

अंक-19 — त्रैमासिक पत्रिका, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर 2014 — वर्ष-7

संपादक मंडल
संरक्षक : डॉ. एस.के.पाटिल
कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
मार्गदर्शक : डॉ. एम.पी. ठाकुर
निदेशक विस्तार सेवाएें, इं.गां.कृ.वि.रायपुर (छ.ग.)
प्रेरणा स्त्रोत : डॉ. अनुपम मिश्रा
आंच. परियोजना निदेशक
जोन -7(भा.कृ.अनु.परि.)जबलपुर
प्रकाशक एवं प्रधान संपादक :
डॉ. बी.पी.त्रिपाठी
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला-कबीरधाम (छ.ग.)
संपादक : डॉ. नूतन रामटेके
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन
सह संपादक :
श्रीमती प्रमिला कांत
उद्यानिकी
इं.टी.एस.सोनवानी
कृषि अभियांत्रिकी
श्री बी.एस. परिहार
सस्य विज्ञान
मनीषा खापर्डे
मात्स्यकी
श्रीमती स्वाती शर्मा
तकनीकि सहायक
श्री वाई.के कौशिक
तकनीकि सहायक

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

कृषक प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा दिनांक 21.07.2014 को कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में उपस्थित 50 कृषकों को केन्द्र की प्रमुख गतिविधियां,खरीफ फसलों में समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन, जैविक खेती, फसलों में रोग एवं कीट प्रबंधन, उद्यानिकी फसलों में समन्वित प्रबंधन, पशुपालन, मत्स्य पालन एवं कृषि यंत्रो के रख रखाव के बारे में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा विस्तृत जानकारी दी गई।

मासिक कार्यशाल का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा 12.08.2014 को मासिक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें जिले के चारो विकासखंडो के वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी, कृषि विकास अधिकारी एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के समस्त कृषि वैज्ञानिकों द्वारा जिले के विगत माह एवं आगामी माह की कृषि कार्य पर विस्तृत चर्चा की गई।

वैज्ञानिक द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण

कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रक्षेत्र में 2 हेक्टेयर पर मूंग किस्म HUM – 16 का बीजोत्पादन कार्यकम लिया जा रहा है। इस मूंग बीजोत्पादन कार्यकम के निरीक्षण हेतु डॉ. पी. के. चंद्राकर, प्रमुख वैज्ञानिक, NSP, रायपुर , श्री सुवेश ठाकुर, बीज प्रमाणीकरण अधिकारी, लाभांडी, रायपुर, अजय कुमार त्रिपाठी, सहायक बीज प्रमाणीकरण अधिकारी, कवर्धा एवं डॉ. आर. के. द्विवेदी, अधिष्ठाता, संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 03.09.2014 को कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण किया गया। वैज्ञानिको के दल ने प्रक्षेत्र में लगे मूंग की फसल किस्म HUM – 16 के प्रदर्शन को संतोषजनक बताया।

OCTOBER TO DECEMBER 2014-15

विगत तीन माह की गतिविधियाँ

ग्रामीण युवाओं को जैव फफूंदनाशक ट्राईकोडर्मा बनाने हेतु प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा द्वारा दिनांक 25–26.09.2014 को दो दिवसीय ग्रामीण युवाओं के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया गया इस प्रशिक्षण में चारों विकासखंडो से कुल 80 ग्रामीण युवाओं को जैव फफूंदनाशक (ट्राइकोडर्मा) उत्पादन विधि पर तकनीकी व प्रायोगिक प्रशिक्षण पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बी. पी. त्रिपाठी एवं डॉ. के. पी. वर्मा, प्रमुख वैज्ञानिक, पौध रोग विभाग, रायपुर द्वारा दिया गया। ट्राइकोडर्मा जैव फफूंदनाशक बनाने की विधि पर पिछले वर्ष से कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है जिससे प्रेरित होकर जिले 10 कृषक अलग अलग जगह पर समूह बनाकर ट्राइकोडर्मा जैव फफूंदनाशक बनाकर खेतो में उपयोग कर रहे है।

वैज्ञानिको द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्र का निरिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यकम समन्वयक डॉ. टी.डी. साहू, डॉ. बी. पी. त्रिपाठी, पौध रोग विशेषज्ञ, डॉ. विजय सोनी, सहायक प्रध्यापक, कीट विज्ञान एवं श्री नागेश्वर लाल पाण्डेय, उपसंचालक कृषि, जिला – कबीरधाम द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्र मे लगे सोयाबीन की फसल का निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य सोयाबीन किस्म PS – 1042 में आई नई बीमारी सडन डेथ आफ सिंड्रोम के बारे में कृषको को अवगत कराना था। कबीरधाम जिले में लगभग 25 हे0 में उक्त प्रजाति बोई गई थी जिसमें लगभग सभी में इस बिमारी से 80 प्रतिशत तक नुकसान हुआ।

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	धान	महामाया	समन्वित प्रबंधन द्वारा धान के झुलसा रोग के नियंत्रण का आकलन	02	04
2.	धान	करमा मासुरी	छिड़कवा विधि से खरपतवार नियंत्रण हेतु कम बीज दर एवं अंकुरण पश्चात खरपतवारनाशी के प्रभाव का आकलन	04	08
3.	धान	करमा मासुरी एवं सुंगंधित (श्याम जीरा, काली गिलास कुबरी मोहर)	धान में तना छेदक नियंत्रण हेतु समन्वित प्रबंधन का आकलन	02	04
4.	धान	महामाया	धान में आभीसी कन्डवा रोग प्रबंधन का आकलन	02	04
5.	सोयाबीन	जे.एस.-95-60	सोयाबीन आधारित फसल पद्धति का आकलन	03	06
6.	सोयाबीन	जे.एस.-335	सोयाबीन में सीधी बोनी के लिए रेज्ड बेड प्लान्टर का आकलन	02	04
7.	मिर्च	इंदिरा मिर्च प्रथम	मिर्च के नवीन किस्म का आकलन	0.9	06
8.	मछली	रोहू, कतला	तालाब में संचय पूर्व मछली उत्पादन का आकलन	0.4	04
9.	सोयाबीन	जे.एस.-95-60	खरपतवारीनाशी का आकलन	02	04
योग				18.3	44

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	धान	स्वर्णा	झुलसा रोग नियंत्रण हेतु रासायनिक दवाई (फोलीक्योर) का प्रदर्शन	12	12
2.	धान	करमा मासुरी	धान की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
3.	सोयाबीन	जे.एस.-95-60	सोयाबीन की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
4.	बरबट्टी	इंदिरा बरबट्टी लाल	बरबट्टी के उन्नत किस्म का प्रदर्शन	0.9	07
5.	अरहर	आशा	अरहर की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
योग				48.9	55

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा (एकड़)	लाभार्थी
1.	अरहर	आशा	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
2.	उड़द	TAU-1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	12	12
योग				24	24

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	4	1	90
2.	पौध संरक्षण	4	1	88
3.	उद्यानिकी	4	1	87
4.	मृदा विज्ञान	4	1	86
5.	पशुपालन	4	1	84
6.	मात्स्यकी	4	1	83
7.	कृषि अभियांत्रिकी	4	1	82
योग		28	7	600

विस्तार गतिविधियाँ

विषय	संख्या	लाभार्थी
वैज्ञानिकों का खेतो में भ्रमण	12	35
केन्द्र पर कृषकों का भ्रमण	60	60
योग	72	95

सामयिक सलाह –2014

क्या करें.....? कब करें.....? क्यों करें.....?

अक्टूबर माह में

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- गन्ने की शीतकालीन फसल की बुआई करें।
- रबी दलहनी फसलो के बीजो के बुआई पूर्व कवक नाशी थायरम या साफ सुपर (2.5 ग्राम/किलो बीज) से पहले उपचारित करना चाहिए। तत्पश्चात राइजोबियम जिवाणु कल्चर (10 ग्राम) तथा जैविक नियंत्रणकर्ता संरूप ट्राइकोडर्मा (6–10 ग्राम) प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोना चाहिए।
- धान में भूरा माहो के अधिक प्रकोप की अवस्था में इमीडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल.का 125 मि.ली./हे0 की दर से छिड़काव करे अथवा कार्बारिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण का छिड़काव करें। छिड़काव पौधे के निचले हिस्से में केन्द्रित करें।
- पर्णच्छद विगलन (शीध राट) नियंत्रण हेतु प्रोपिकोनाजोल का (1 मि.ली./ली.) छिड़काव करें।
- तिवड़ा की उन्नत प्रजातियां जैसे – प्रतीक, रतन, महातिवड़ा का उपयोग करें।
- मटर की उन्नत प्रजातियां जैसे – अंबिका,शुभ्रा, रचना का उपयोग करें।

उघानिकी

- टमाटर, मिर्च, बैगन, प्याज एवं गोभीवर्गीय फसलों की नर्सरी लगाए।
- आलू की बुवाई कार्बेन्डाजिम दवा 2.5–3 ग्राम को 1 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 मिनट तक बीजों को उपचारित करें।
- हरी मटर,पालक, मूली, गाजर, धनियां, मेथी आदि की बुवाई करें।
- बगींचे की फसल में सिंचाई करें।
- आम, अमरूद, नीबू,कटहल आदि में खाद की शेष मात्रा डालें।
- आम में गुच्छा रोग की रोकथाम के लिए एन.ए.ए. नामक हारमोन का 200 मि.ली./एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- शीतकालीन पुष्पों की बुवाई करें।

पशुपालन

- पशुओं को हरे चारे की उपलब्धता आवश्यक होती है इस हेतु रबी मौसम में हरे चारे वाली फसलों जैसे बरसीम, रिजका, सरसों, जई का उत्पादन करें।
- समान्यतः वर्षा ऋतु समाप्त होने पर पशुओं को धान का पैरा ही खिलाया जाता है जिसका पौष्टिक मान कम होता है इस हेतु दुग्ध उत्पादक पशु एवं खेतीहर पशुओं के आहार में पैरा के साथ–साथ हरे चारे एवं खलियां का भी समावश किया जाना चाहिए।
- पशुओं को खुरपका मुँहपका तथा गलघोंटू बीमारी से बचाव हेतु टीकाकरण जाड़ा शुरु होने से पहले अक्टूबर – नवम्बर तक करवा लेना चाहिए।

मत्स्य पालन

- जुलाई में मत्स्य बीज संचय किये है तो 10 प्रतिशत शरीर के भार के अनुसार मछली को भोजन दे चावल की कनकी और सोयाबीन की खली 1:1 मे दें।

नवम्बर माह में

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- धान के कटाई के उपरांत खेत की संचित नमी के उपयोग हेतु जीरो सीड ड्रिल द्वारा फसलों की बुआई करें।
- धान के कटाई के बाद खेत में संरक्षित नमी में चना, अलसी, मसूर, कुसुम की बुवाई करें।
- चना, मसुर, मटर, सरसों आदि फसलों में नींदा नियंत्रण हेतु बुआई के 3 दिन के अंदर पेन्डीमेथालिन दवा (30 ई.सी.) 750 मि.ली. से 1 लीटर सकिय तत्व (दवा की मात्रा 2.5–3 ली.) प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- अंकुरण पश्चात् संकरी पत्ती वाले खरपतवार अधिक होने पर म्युजेलोफॉप इथाइल नामक दवा का 40–50 मि.ली. सकिय तत्व (दवा की मात्रा 800 कि.ग्रा.से 1 ली.) प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- गेहूँ की बीजो को कार्बक्सिन+थायरम (2 ग्राम/किलो) बीजो की दर से उपचारित कर बोयें।
- दलहनी फसलों के उकठा रोग नियंत्रण हेतु निरोधक प्रजातियों का उपयोग करें।
- खड़ी फसल में सिंचाई करें, गन्ने की कतारों के मध्य अंतरवर्ती फसलें जैसे आलू, प्याज, राजमा आदि की बुवाई करें।
- सिंचित अवस्था में गेहूँ, बरसीम, मटर, सरसो, चना, कुसुम, मसूर, अलसी आदि फसलों की बुवाई करें।

उघानिकी

- नर्सरी की पौध में गलन की समस्या की रोकथाम के लिए कार्बेन्डाजिम दवा 2.5–3 ग्राम को 1 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- टमाटर, बैगन,प्याज,आदि की नर्सरी तैयार होने पर उसकी रोपाई करें तथा खाद की अनुशंसित मात्रा का उपयोग करें।
- मटर में पाउडरी मिल्ड्यू की रोकथाम हेतु केराथेन 0.15 प्रतिशत या सल्फेक्स 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- बगीचें के पौधो के थालों की गुड़ाई करें तथा तने पर बोर्डो पेस्ट लगाएं।
- आम, लीची, आंवला आदि पौधों में मिलीबग को पेड़ के उपर चढ़ने से राकने के लिए ग्रीस की पट्टी लगाएं।
- आम के वृक्ष में पुष्प कलिका बनना आरंभ हो गया हो तो सिंचाई बन्द रखें। जिससे फुल अधिक आएंगे।
- पुष्पों के पौधों मे सिंचाई करें।

पशुपालन

- लूसर्न व बरसीम चारे की कटाई जमीन से 10 सेमी. छोड़कर 30–35 दिन के अंतराल पर करें तथा सिंचाई करें।
- पशु नस्ल हेतु वर्षा ऋतु के बाद निकृष्ट सांडो एवं बैलों का बधियाकरण किया जाना चाहिए।

मत्स्य पालन

- मछलियों को कसरत करवाने के लिये जाल चलाए।

दिसम्बर माह में

फसलोत्पादन एवं पौध संरक्षण

- गेहूँ की बुवाई पूर्ण करें तथा बुवाई के 20–25 दिन बाद (किरीट जड़ अवस्था) सिंचाई करें।
- गेहूँ की विलंब/देरी से बुआई की दशा में बीज की मात्रा से 20–25 किलो प्रति हे0 की दर से बढ़ा देवें।
- देरी से बुआई हेतु गेहूँ की जी. डब्लू 173, लोक – 1, अरपा, विदिशा, एम.पी.4010 आदि किस्मों का चयन करें।
- गन्ने की कटाई कर पिराई करें अथवा गन्ना कारखाने में भेजें।
- चना, मटर एवं मसूर में दाने भरने की अवस्था पर सिंचाई करें।

उघानिकी

- मिर्च एवं गोभीवर्गीय फसलों के पौध की रोपाई करें तथा खाद की अनुशंसित मात्रा डालें।
- आलु की फसल में निंदाई गुड़ाई एवं मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें तथा विषाणु जनित रोग के रोकथाम के लिए मिथाइल डेमटान दवा 1 मि. ली./ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आलू में पछेती झुलसा रोग के लक्षण दिखने पर डायथेन एम–45 दवा का छिड़काव करें, दूसरा छिड़काव 15 दिन के बाद करें।
- खरबूज, तरबूज, लौकी, करेला, ककड़ी एवं कद्दू लगाने खेतों की तैयारी करें तथा पालिथीन की थैली में बीज की बुवाई करें।
- धनिया, मेथी की फसल पर फफूंद से बचाव हेतु 0.3 प्रतिशत सल्फेक्स का छिड़काव करें।
- प्याज, लहसून में सिंचाई व निंदाई करें, परपल ब्लाच नामक रोग के नियंत्रण हेतु ब्लाइटाक्स–50 या डायथेन उम–45 फफूदनाशक दवा का छिड़काव 15 दिन के अंतर पर दो बार करें।
- मिर्च के चुर्डा–मुर्डा रोग की रोकथाम के लिए मिथाइल डेमेटान कीटनाशक (1 मि.ली./लीटर पानी) का छिड़काव 10–15 दिन के अंतराल पर करें।

पशुपालन

- पशुओं को चराई हेतु प्रायः बाहर भेजा जाता है इस हेतु घास पर सुबह ओस खत्म हो जाने के बाद पशुओं को चराना उचित पाया गया है।
- शीत ऋतु में ठंड बढ़ने पर पशु शालाओं में मोटे परदे की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे रात में ठंड के प्रभाव से पशुओं को बचाया जा सके।
- शीत ऋतु में पशुओं को कभी भी ठंडा चारा, दाना या पानी नही देना चाहिए, क्योकिं इससे पशुओं को ठंड लग जाती है और ठंड का उचित इलाज न होने पर निमोनिया नामक बीमारी हो जाती है।

मत्स्य पालन

- मछली को भोजन 2–3 प्रतिशत शरीर के भार के अनुसार दें।